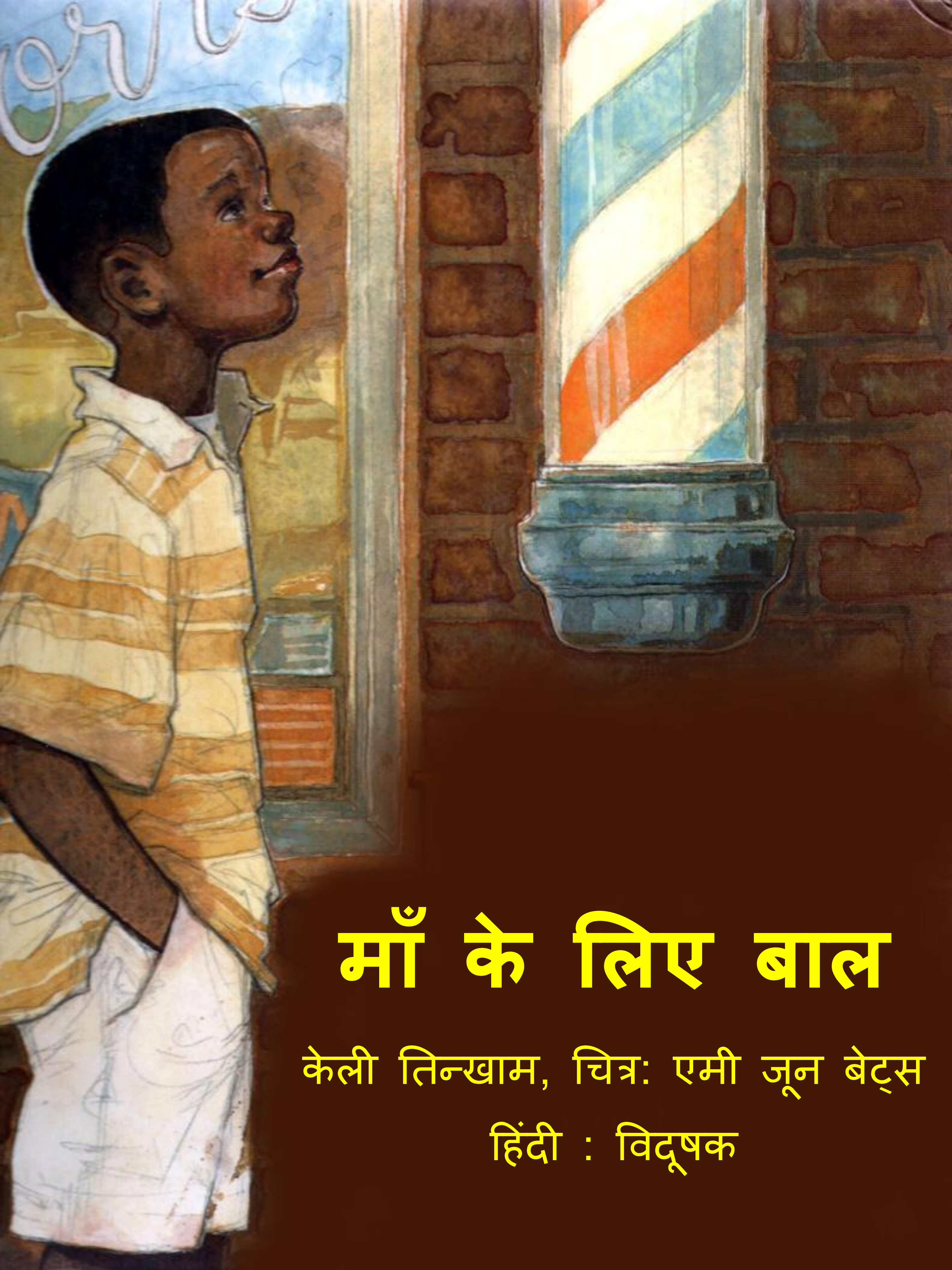


माँ के लिए बाल

केली तिन्खाम, चित्र: एमी जून बेट्स

हिंदी : विदूषक

माँ के लिए बाल

केली तिन्खाम, चित्र: एमी जून बेट्स

हिंदी : विदूषक





DIAL BOOKS FOR YOUNG READERS

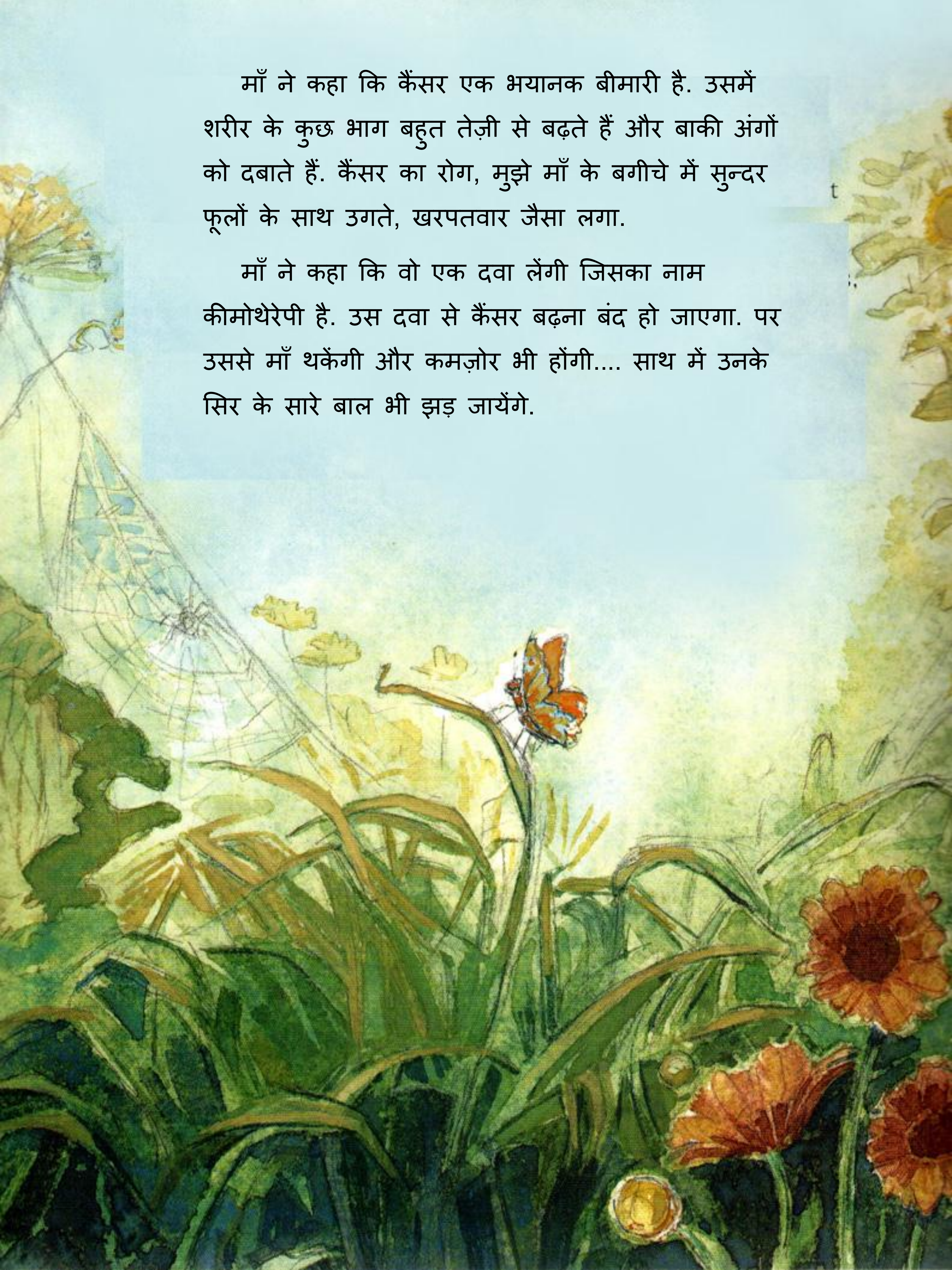


बहुत लोगों को सिर के बालों का महत्व पता नहीं होता. पर मुझे बालों की अहमियत मालूम है. हमारे कार्टर परिवार के लिए बाल, हमेशा से बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं – विशेषकर अक्टूबर में जब परिवार का सामूहिक फोटो लिया जाता है. मुझे ज़्यादातर लम्बे बाल ही अच्छे लगते हैं. मेरी बहन योलांडा को चोटियाँ पसंद हैं. छोटे भाई स्टीव और पापा को प्राकृतिक छोटे बाल पसंद हैं.
माँ को लम्बी चोटियाँ पसंद हैं – पर फोटो वाले दिन वो अपनी चोटियों को गूंथकर एक सुन्दर काला मुकुट बनाती हैं.

पर अगस्त में सब कुछ बदल गया. माँ को कैंसर हो गया.







माँ ने कहा कि कैंसर एक भयानक बीमारी है. उसमें शरीर के कुछ भाग बहुत तेज़ी से बढ़ते हैं और बाकी अंगों को दबाते हैं. कैंसर का रोग, मुझे माँ के बगीचे में सुन्दर फूलों के साथ उगते, खरपतवार जैसा लगा.

माँ ने कहा कि वो एक दवा लेंगी जिसका नाम कीमोथेरेपी है. उस दवा से कैंसर बढ़ना बंद हो जाएगा. पर उससे माँ थकेंगी और कमज़ोर भी होंगी.... साथ में उनके सिर के सारे बाल भी झड़ जायेंगे.



पूरे सितम्बर भर माँ के बाल झड़कर कम होते रहे. “मुझे लगता है,” माँ ने एक दिन सुबह कहा. “कि मेरे बाल सोफी के बालों से भी ज्यादा तेज़ी से झड़ रहे हैं.”

सोफी हमारी बिल्ली थी. “अरे माँ,” मुझे पता था कि माँ को अपनी चोटियाँ कितनी पसंद हैं, “तुम फ़िक्र मत करो. अगर तुम्हारे सब बाल भी झड़ गए तो मैं तुम्हारे लिए नए बाल ले आऊँगा.”

माँ ने ब्रश में लगे बालों का गुच्छा मुझे दिखाया. “तुम बाल कहाँ से लाओगे, मार्कस?”

“मुझे पता नहीं,” मैंने स्वीकार किया, “पर मैं लाऊंगा.”

अक्टूबर तक मैं अपना वादा पूरी तरह भूल चुका था. फोटो खिंचने वाला दिन पास आ रहा था! पापा ने क्रावफोर्ड पार्क में पेड़ों के नीचे हम सबका फोटो खींचने के लिए फोटोग्राफर मिज-लार्सन को बुलाया था. माँ को अक्टूबर में मेपल पेड़ के पत्तों के सुनहरे-लाल रंग, बेहद अच्छे लगते थे. “पूरे राज्य में, क्रावफोर्ड पार्क के पेड़, सबसे खूबसूरत लगते हैं,” वो कहतीं.

पर इस साल माँ ने पेड़ों की तरफ़ देखा तक नहीं. मैंने माँ को, शुगर मेपल पेड़ों पर बैठी एक कार्डिनल चिड़िया दिखाई. पर माँ का ध्यान कहीं और था. अब तक उनके सिर के सब बाल झड़ चुके थे, और हँसते समय उनकी आँखें दुखी हुई नज़र आती थीं. पिछले साल जब मेरा प्रिय चचेरा भाई रिची, वर्जिनिया चला गया, तब मेरी भी हालत वैसी ही हुई थी.







अब फोटो लेने में सिर्फ पांच दिन बचे थे. माँ अभी भी हमें कपड़ों की शौपिंग के लिए नहीं लेकर गई थीं. उससे मेरी परेशानी और बढ़ गयी थी. तब मैंने योलांडा से बात करने की सोची. वो दस साल की थी, और मुझसे दो साल बड़ी थी.

"माँ बीमार हैं," उसने कहा. "बहुत बीमार हैं."

तब मुझे अपना वादा याद आया. पर मैं खुद से बार-बार यह कहता रहा. "बालों से इतनी बड़ी समस्या भी सुलझ जाएगी."

योलांडा ने अपनी आँखें बड़ी करते हुए कहा. "इतना सरल नहीं है मार्कस. कुछ लोग इस बीमारी से कभी भी ठीक नहीं होते."

"माँ ठीक हो जायेंगी," मैंने कहा. "वो दवाएं खा रही हैं. उनकी तबियत ज़रूर ठीक होगी."



उस रात मैंने माँ से, फोटो-दिवस के बारे में बात की. उन्हें कुछ कमजोरी थी. वो कुर्सी पर आराम कर रही थीं और पापा डिनर बना रहे थे. उनका चेहरा फीका और फूला हुआ था.

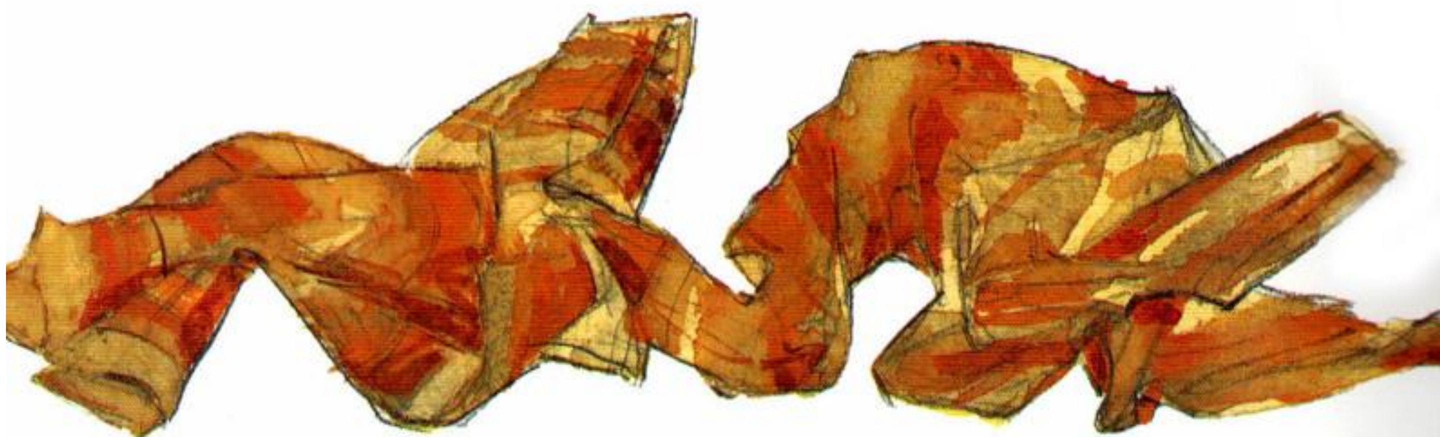
“उस दिन फोटो ज़रूर ली जाएगी,” माँ ने कहा, “पर मैं उसमें नहीं होउंगी. मेरे अब बाल ही कहाँ बचे हैं.... बिना बालों के मैं, फोटो में कितनी अजीब लगूंगी?”

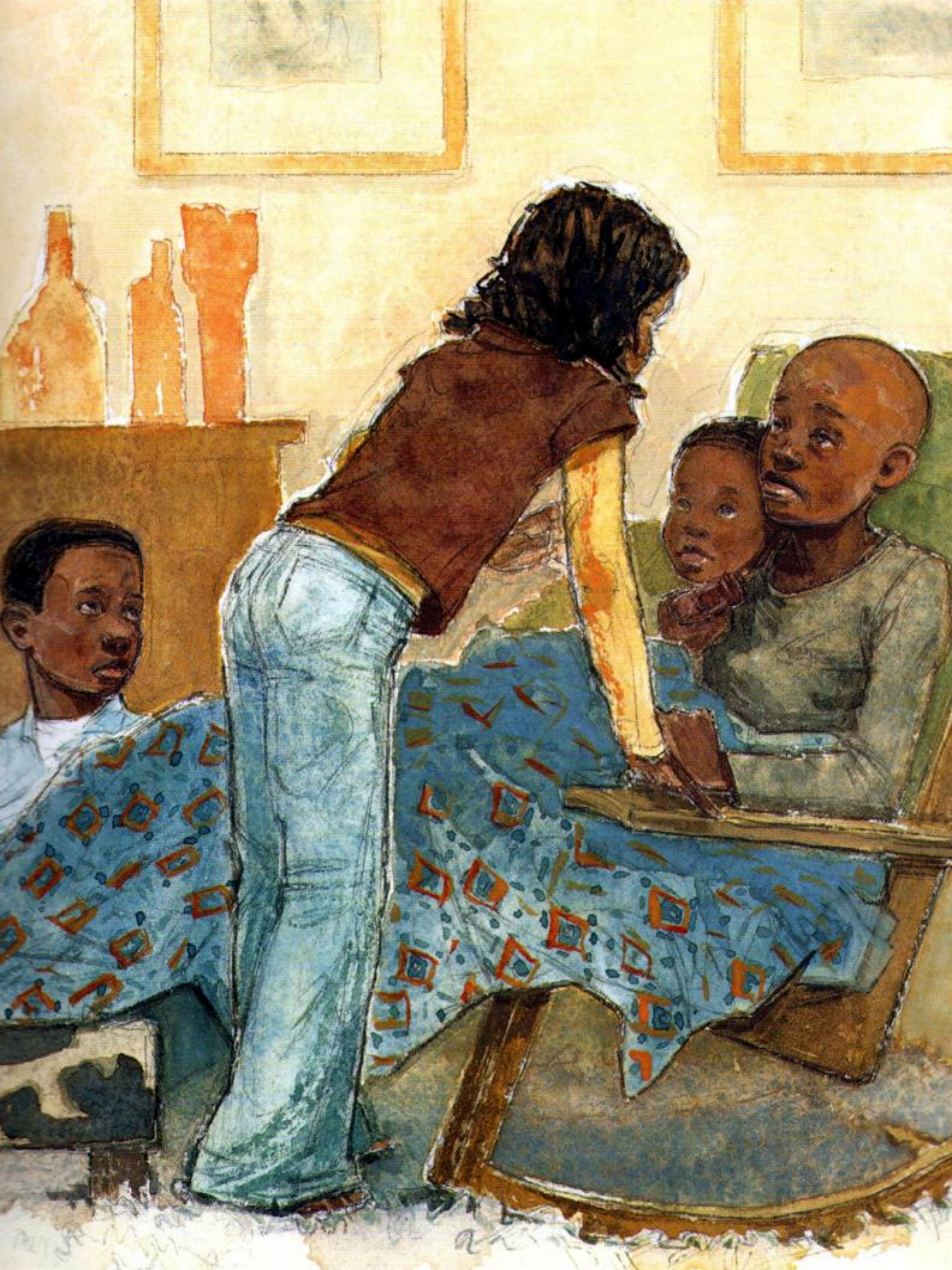
तब योलांडा ने अपनी किताब एक तरफ़ रखी और वो भी माँ की कुर्सी के पास आ गई. “आपके बिना फोटो का मज़ा ही किरकिरा हो जाएगा,” उसने विनती भरे स्वर में कहा. “आप चाहें तो एक विग (नकली बाल) पहन सकती हैं. तब किसी को आपका सिर नहीं दिखेगा.”

“पर मुझे खुद तो पता ही होगा – अपने टकले सिर के बारे में.” माँ की आँखें कहीं दूर देख रही थीं. फिर अंत में उन्होंने कहा. “मैं नहीं चाहती कि लोग मुझे इस तरह से याद करें.”

माँ फोटो में नहीं होंगी, यह बात मुझे बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी. “मैं ज़रूर आपके लिए बाल खोजकर लाऊंगा,” मैंने उनसे कहा.

योलांडा ने दुबारा अपनी आँखें घुमाईं. माँ ने कुछ नहीं कहा. वो मुस्कुराईं और फिर से सो गईं.





अगले दिन पूरे समय मैं यही सोचता रहा कि मैं माँ के लिए बाल कैसे जुगाड़ करूं. स्कूल से लौटकर आने के बाद माँ हमें, शौपिंग के लिए एक डिपार्टमेंट स्टोर में ले गईं. “तुम लोग आगे चलो,” माँ ने कहा, “मैं अभी कुछ देर में आती हूँ.” हम लोग सीधे खिलोनों वाले कमरे की ओर गए, पर हम वहां पहुँच नहीं पाए.

बीच के एक कमरे में मुझे, तरह-तरह के कपड़े, मुखौटे और उनके साथ-साथ कुछ और भी दिखाई दिया.

“देखो!” मैंने कहा. “बाल. नकली बालों की “विग्स”.

योलांडा और मैंने कई “विग्स” देखीं. “इन्हें पहन कर देखें,” मैंने माँ से कहा.

“मुझे कुछ पता नहीं,” पहले तो माँ विग्स देखकर हिचकिचायीं, फिर योलांडा ने उनसे बहुत मिन्नत की. माँ ने चारों ओर देखा, और उसके बाद ही अपनी टोपी हटाई. एक विग पहनने में मैंने उनकी मदद भी की.

“वाह!” उन्होंने कहा. “क्या मैं इसमें सुन्दर लग रही हूँ?”

“बहुत लाल रंग की है,” मैंने विग के बालों को संवारते हुए कहा.

फिर योलांडा ने माँ को दूसरी विग पहनाई. किसी विग का रंग उन्हें पसंद नहीं आया, कोई छोटी थी, कोई चुभ रही थी. एक विग माँ को कुछ ठीक लगी, पर अंत में उन्होंने, उसे भी नकार दिया.





मैं माँ से एक और विग पहनने के लिए कहने ही वाला था, जब माँ ने मेरे हाथ, अपने हाथों में लिए. “मार्कस, माँ इस तरह की विग्स नहीं पहन सकतीं, क्यूंकि उसके बाद उन्हें अन्दर से अच्छा नहीं लगेगा. नकली विग्स पहनने के बाद माँ को ऐसा लगेगा जैसे उन्होंने बाघ की बिंदियों वाली खाल पहनी हो. तुम ज़रूर मेरा मतलब समझ गए होगे?”

मैंने अपना सिर हिलाया. पर अन्दर-ही-अन्दर मुझे बहुत फिकर भी लग रही थी. मुझे पता था कि अगर मुझे माँ के लिए बाल ढूंढने हैं, तो मुझे उसके लिए ज़रूर कुछ “विशेष” करना होगा.

एक हफ्ता पलक झपकते ही बीत गया. जल्द ही अगला शुक्रवार आ गया. अगले दिन हमें फोटो के लिए जाना था. फिर तो मुझे बहुत फ़िक्र होने लगी. माँ हर समय थकी-थकी लगती थीं. मुझे रात को नींद भी नहीं आयी. फिर सोते समय मैंने भगवान से प्रार्थना की और दो मन्नतें मांगीं – माँ फोटो में भी शामिल हों, और उनकी तबियत भी जल्दी से दुरुस्त हो जाए.





अगले दिन सुबह की धूप में पेड़ों के पत्तों के रंग बहुत दिलकश और खूबसूरत लग रहे थे. माँ के उठकर योलांडा की चोटियाँ बनायीं. पापा ने खुद के और स्टीव के बाल संवारे. पर माँ के लिए बाल? मैं उन्हें कहाँ से लाऊं?

नाश्ते के बाद पापा ने मुझे नाई की दुकान पर छोड़ दिया और वो शनिवार की शौपिंग के लिए चले गए. "मिस्टर डोर से कहना कि वो तुम्हारे बाल अच्छी तरह काटें," पापा ने मुझसे कहा. "बहुत छोटे बाल मत कटवाना."

उस समय मिस्टर डोर, एक आदमी के बाल काट रहे थे. उनकी कैंची क़तर-क़तर चल रही थी और कटे बाल ज़मीन पर गिर रहे थे. मैंने एक बार देखा, फिर दुबारा देखा – मिस्टर डोर के जूतों के पास, बालों का एक ढेर इकट्ठा हो गया था. उन बालों को देखकर मुझे आगे क्या करना है, यह मुझे समझ में आया.



फिर मिस्टर डोर ने मुझे कुर्सी पर बैठने के लिए बुलाया. “तुम्हारी माँ की तबियत कैसी है?”

मुझे समझ में नहीं आया कि मैं उन्हें क्या उत्तर दूं, इसलिए मैंने कहा, “उनकी तबियत में थोड़ा सुधार है.” मैं चाहता था कि पापा के आने से पहले मेरे बाल कट जाएँ.

“यह तो अच्छी बात है,” मिस्टर डोर ने कहा. “क्या पहले जैसे ही, तुम्हारे बाल काटूं?”

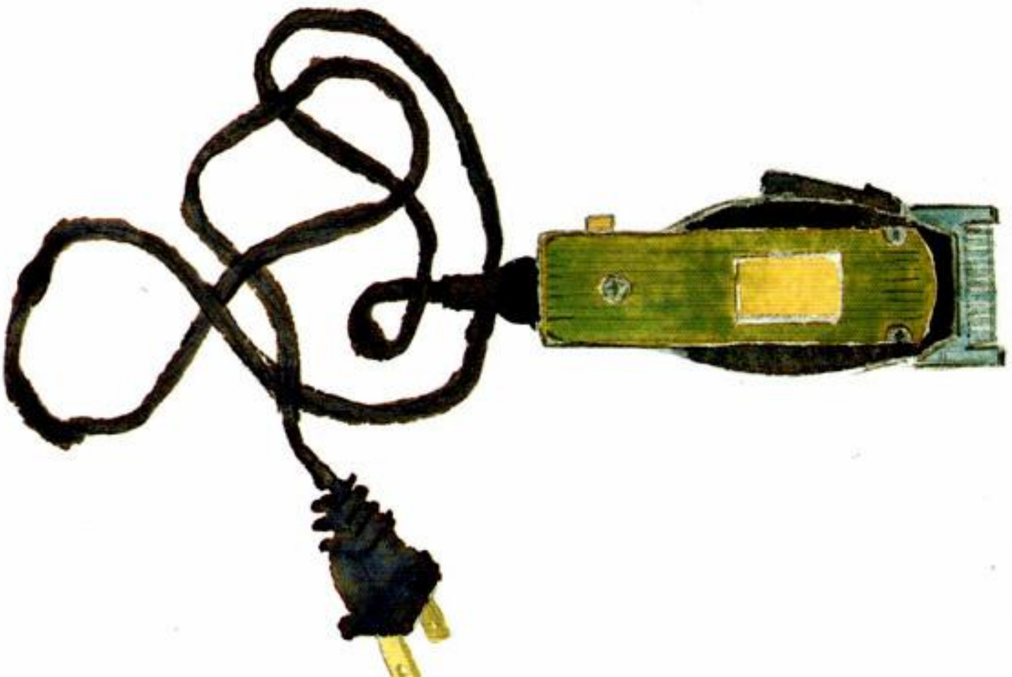
“नहीं,” मैंने सोचा कि मिस्टर डोर मुझसे और सवाल नहीं पूछेंगे. “कृपा मेरे सभी बाल काट दें – मुझे एकदम टकला बना दें.”

“पर मार्कस, मैं तो हमेशा तुम्हारे बाल अलग स्टाइल में काटता हूँ.” फिर उन्होंने टेलीफोन उठाया. “चलो, मैं तुम्हारी माँ से पूछ लेता हूँ.”

“नहीं!” मैंने कहा. “माँ अभी सो रही होंगी. पापा ने मुझे आपकी दुकान पर छोड़ा है. उन्होंने मुझे अपनी मर्ज़ी के हिसाब से बाल कटवाने को कहा है.”

तब मिस्टर डोर ने फोन रख दिया. “ठीक है मार्कस. कहीं मैं मुश्किल में न पड़ जाऊं.”

मैं एकदम चुपचाप बैठा रहा और मिस्टर डोर की मशीन चलती रही. माँ उन बालों का उपयोग कर सकती थीं! वो फोटो में भी होंगी और उनकी तबियत भी ठीक होगी!




Derr's

बाल काटने के बाद मिस्टर डोर मुझे आईने के सामने ले गए. “ख़त्म हुआ काम.” मुझे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ. मैं बिल्कुल अलग दिख रहा था – एकदम माँ जैसा. मैं खुद को काफी देर तक घूरता रहा होऊंगा, क्यूंकि जब मैंने नीचे देखा, तो फर्श एकदम साफ़ था!

“मेरे बाल कहाँ गए?” मैंने परेशान होकर कहा. “मुझे वो बाल चाहिए!”

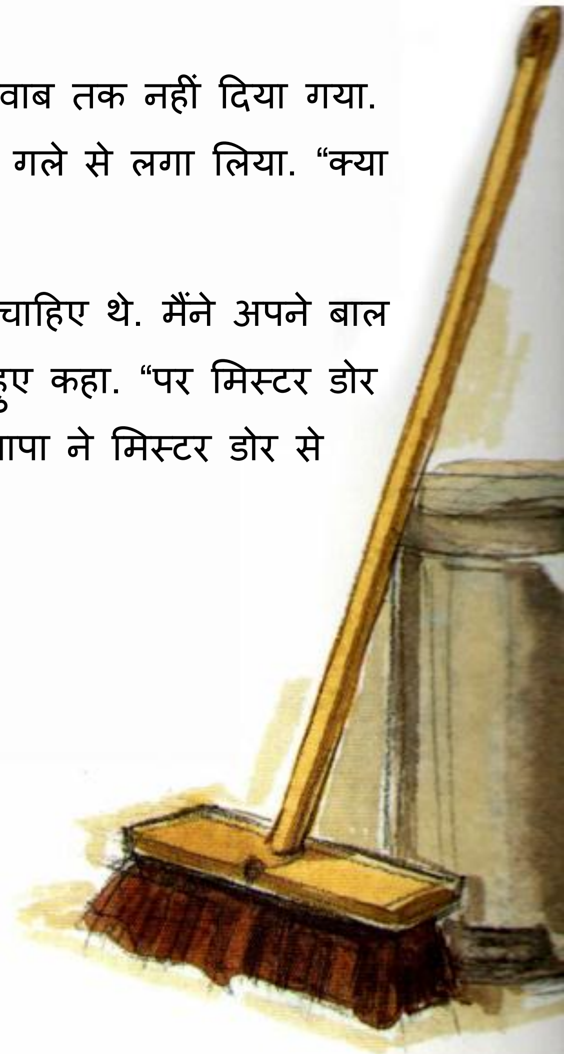
मिस्टर डोर हँसे. “क्या तुम्हें अपने बाल चाहिए थे? मुझे क्या पता था. मैंने उन बालों को इकट्ठा करके कूड़ेदान में डाल दिया.

फिर मैं ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा. मेरी योजना फ़ेल हो गई थी. टकला होने के बाद भी, एक भी बाल मेरे हाथ नहीं लगा था. फिर पापा के आने तक मैं रोता रहा.

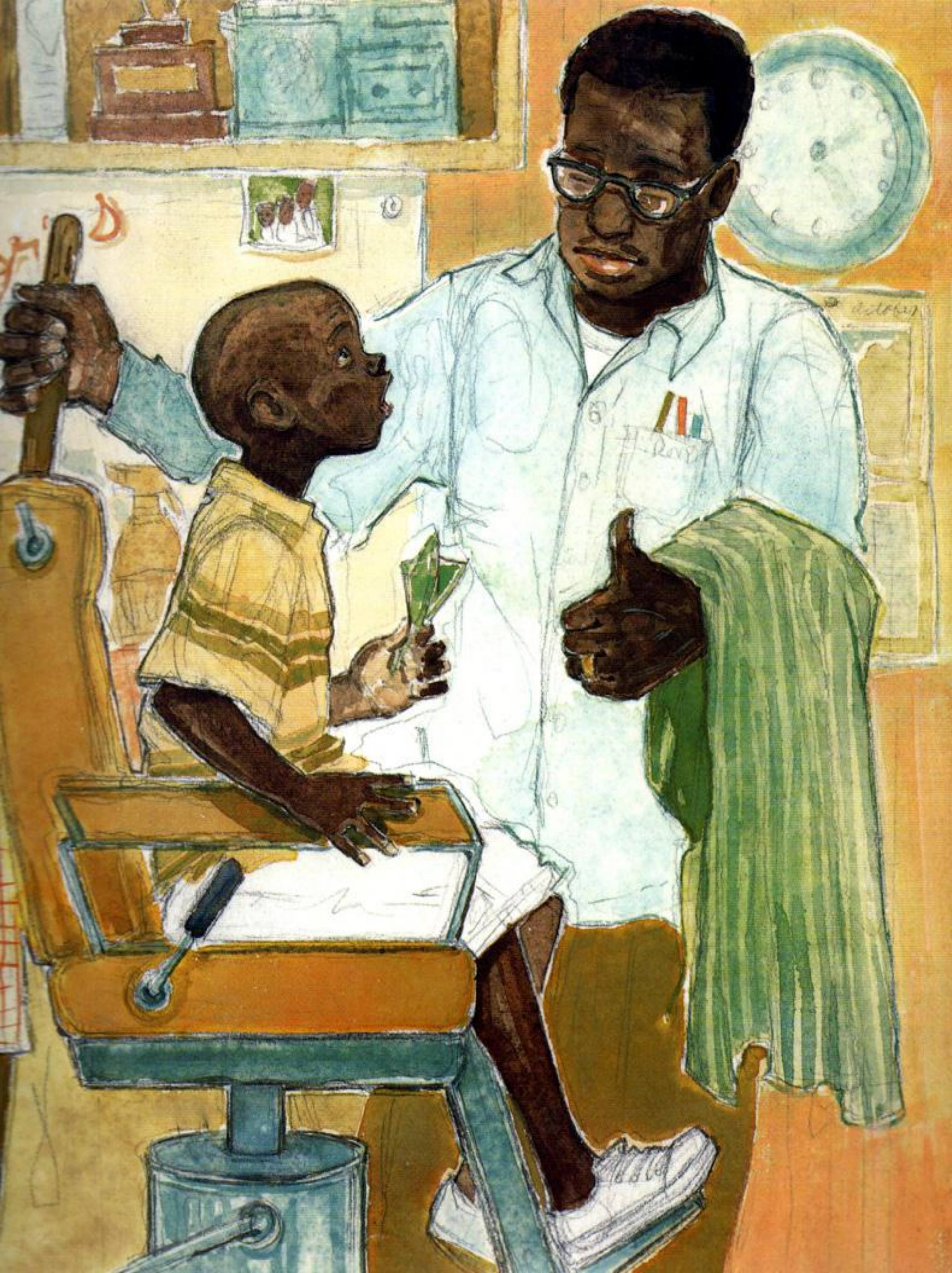
“मार्कस?” पापा ने पूछा. “क्या हुआ?”

मेरा रोना, रुक ही नहीं रहा था, इसलिए मुझसे जवाब तक नहीं दिया गया. मिस्टर डोर ने समझाने की कोशिश की. पापा ने मुझे गले से लगा लिया. “क्या हुआ बेटा?”

“बाल,” मैंने थूक निगलते हुए कहा. “माँ को बाल चाहिए थे. मैंने अपने बाल कटवाए, जिससे कि मैं उन्हें दे सकूं.” मैंने साँस लेते हुए कहा. “पर मिस्टर डोर ने मेरे बाल फेंक दिए.” मैं अभी भी सिसक रहा था. पापा ने मिस्टर डोर से गुडबाय कहा और फिर वो मुझे घर लेकर गए.







माँ बरामदे में हमारा इंतज़ार कर रहीं थीं. पापा हाथ पकड़कर मुझे माँ के पास ले गए. “तुमने आज जो कुछ किया, वो माँ को बताओ.”

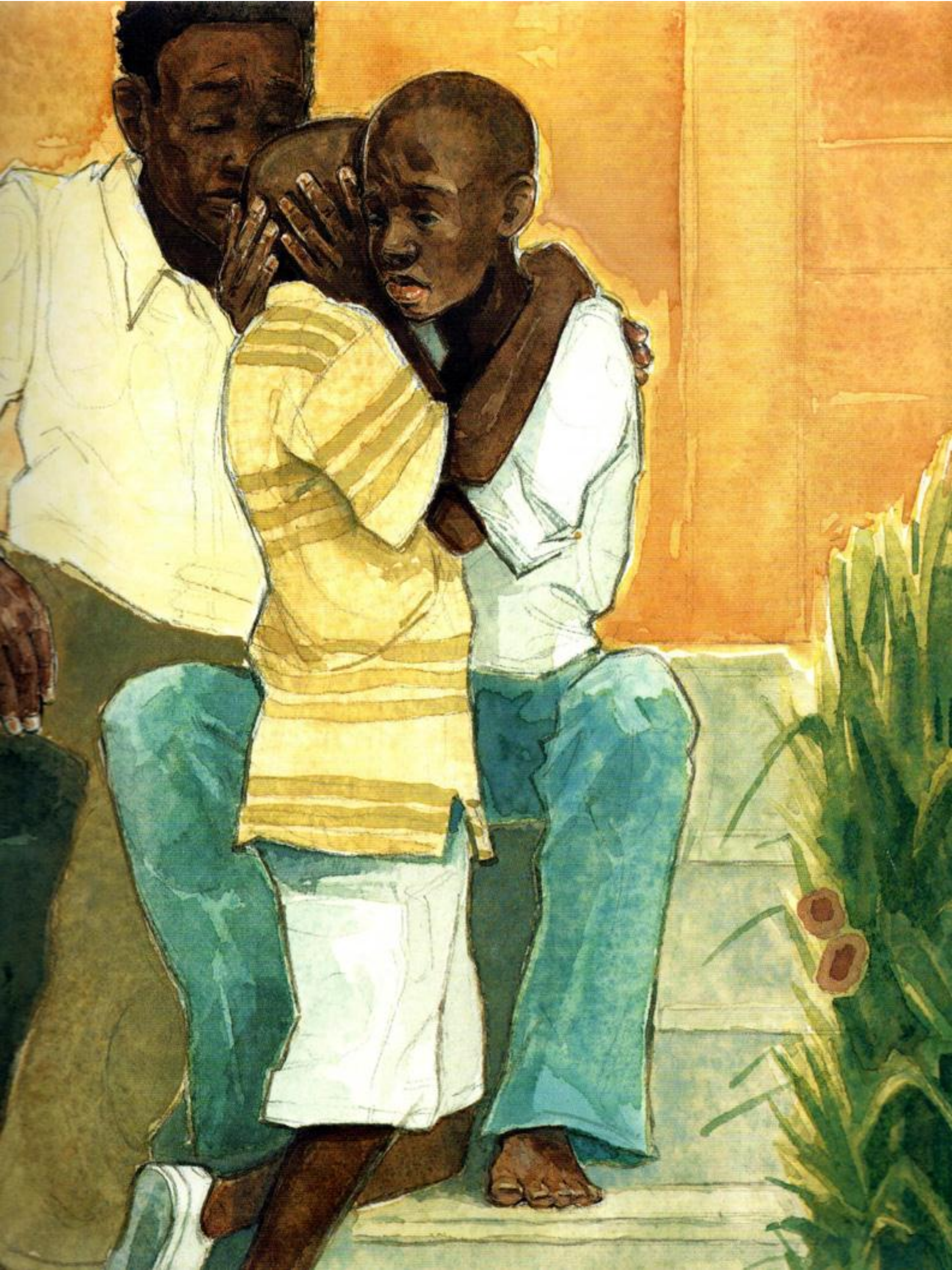
घबराते हुए मैंने माँ को पूरी बात सुनाई. माँ ने एक शब्द भी नहीं कहा. उनके होंठ कसकर भिंच गए. उनकी आँखें, आंसुओं से तर हो गईं.

“माँ, माफ़ करो. मैंने आपके बाल खो दिए.”

“बेटा, तुमने कुछ नहीं खोया.” माँ ने मेरा चेहरा अपने दोनों हाथों में लेकर चूम लिया. “जब तुम मेरे पास हो, तो फिर मुझे बालों की क्या ज़रुरत?”

“पर बालों के बिना आपकी तबियत कैसे ठीक होगी!” मैंने कहा. “जब आप नहीं होंगी, तो फिर मैं किसे माँ बुलाऊंगा?”







“अरे मार्कस,” माँ ने रोते हुए कहा. “बालों से न तो मेरी तबियत सुधरेगी और न ही बिगड़ेगी. मुझे अपनी हालत खुद अच्छी नहीं लगती है, पर इसका मतलब यह नहीं है कि कैंसर की जो दवा मैं ले रही हूँ वो काम नहीं कर रही है.” फिर माँ ने मेरे चारों ओर अपनी बाहें लपेटीं और कहा, “मैं तुमसे वादा करती हूँ कि मैं हमेशा तुम्हारी माँ रहूंगी – मैं हमेशा तुम्हारे दिल में रहूँगी. मेरा प्यार, छाया की तरह हमेशा, तुम्हारा पीछा करेगा, और तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा.”

“चाहें कुछ भी हो?” मैंने पूछा.

“चाहें कुछ भी हो?” माँ ने जवाब दिया.

फिर मैंने माँ को इतनी कसकर गले लगाया कि मेरे अन्दर की सारी गांठे खुल गईं और परेशानियाँ ख़त्म हो गई. मुझे इस बात से बहुत सकून मिला, कि चाहें कुछ भी हो, माँ हमेशा मेरे साथ होंगी.



पार्क जाने से पहले माँ ने कहा, “ज़रा एक मिनट रुको.” फिर वो घर में दौड़कर गईं. जब वो वापिस आईं तो उनके सिर पर एक “विग” थी जो योलांडा ने सुझाई थी. “चलो अब हम सब मिलकर अपने परिवार के कुछ फोटो खिंचवायें,” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा.

उस दिन शाम को फोटोग्राफर मिज ने, क्रावफोर्ड नदी के पास हमारे फोटो खींचे. माँ ने कहा कि उस दिन पेड़ भी, हमारी ही तरह अपने सबसे सुन्दर पत्ते पहने थे. एक महीने बाद मेरे बाल भी धीरे-धीरे वापिस उगने लगे थे.





तीन महीने बाद माँ जब डॉक्टर के पास से लौटीं, तो वो अपने साथ खुशखबरी लाईं.

"कीमोथेरेपी अच्छा काम कर रही थी. छह हफ़्तों में पूरा इलाज ख़त्म हो जाएगा. कम-से-कम तब तो कैंसर से निजात मिलेगी.

"वाह!" यह सुनकर हमारा पूरा घर ख़ुशी से नाचने लगा.

माँ ने मुझे अपनी गोदी में उठाया और फिर मेरे सिर पर अपना हाथ फेरा. "तुम्हें कैसे लग रहा है अपने बालों को बढ़ता देखकर?"

"बहुत अच्छा!" सिर पर बाल होना अच्छी बात थी. पर मेरे लिए सबसे अच्छा था - माँ का होना, और माँ के लिए, मेरा होना.

तभी पापा ने कहा - क्यूंकि मई में भी बहुत से पेड़ों के फूल खिलते थे, इसलिए अब से हम मई में भी, पूरे परिवार के फोटो लेने की परंपरा शुरू करेंगे! मैं उसके लिए ज़रूर एक नया हेयर स्टाइल सोचूंगा. अगर मैं दो चुटिए बनाऊं तो माँ को कैसा लगेगा .....

